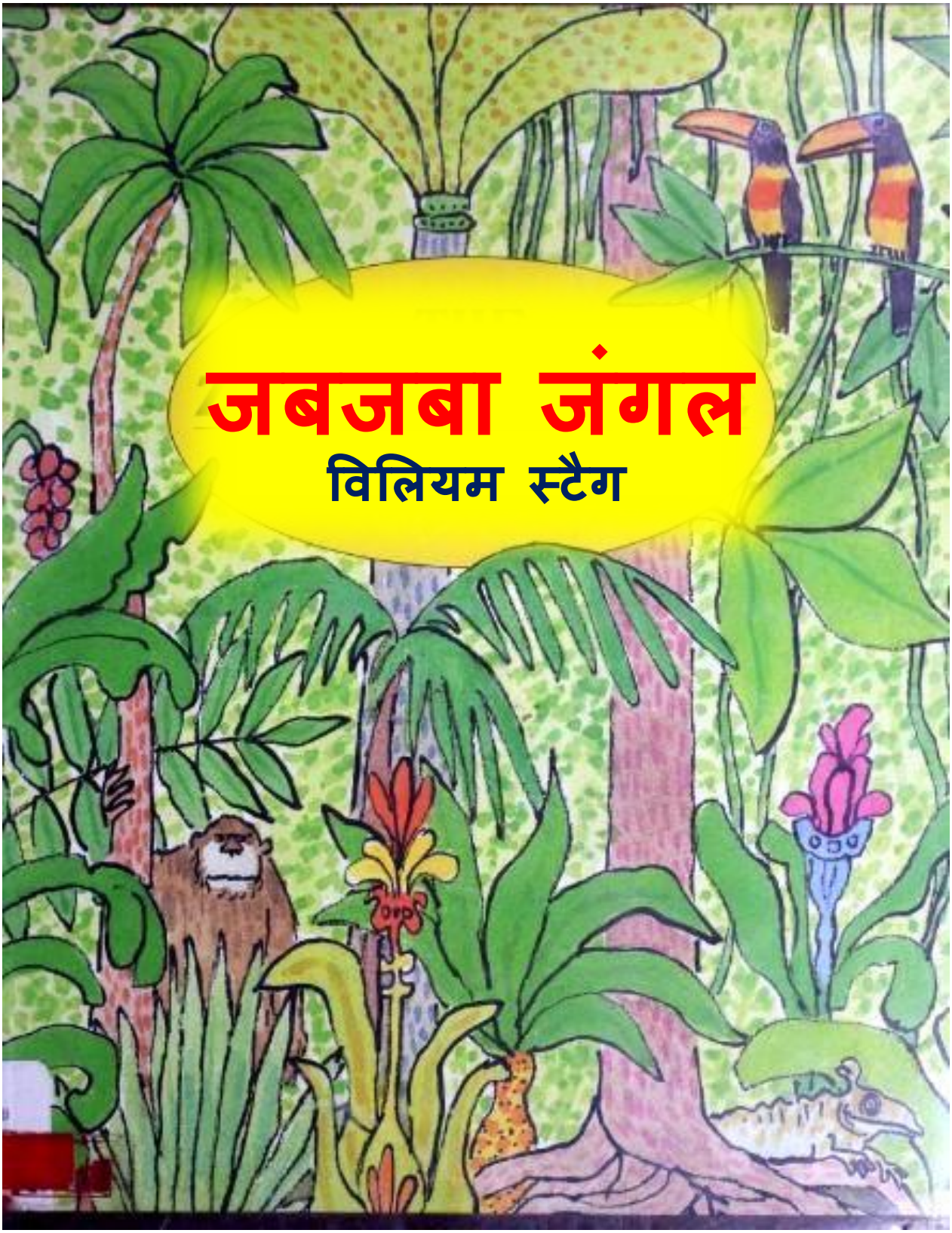
जबजबा जंगल
विलियम स्टैग

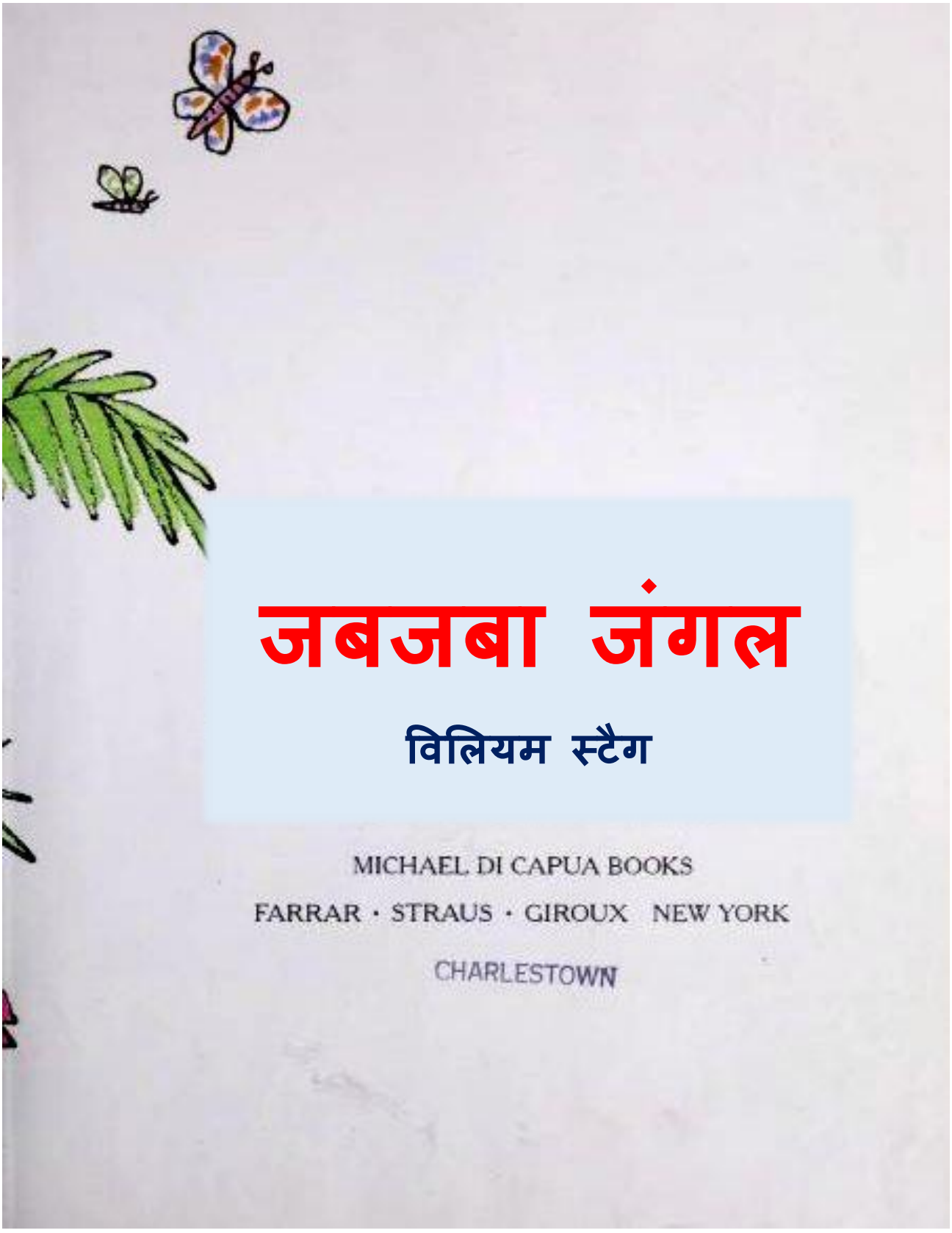

जबजबा जंगल

विलियम स्टैग

MICHAEL DI CAPUA BOOKS
FARRAR · STRAUS · GIROUX NEW YORK
CHARLESTOWN

TO AURORA

J
PZ7
.S8177Zab
1987
8704393325
3/4/88

Copyright © 1987 by William Steig
All rights reserved
Library of Congress catalog card number: 87-17690
Published simultaneously in Canada by Collins Publishers, Toronto
Color separations by Offset Separations Corp.
Printed and bound in the United States of America
by Horowitz/Rae Book Manufacturers
Designed by Atha Tehon
First edition, 1987

लियोनार्ड अपने पैने और बड़े चाकू से लता-पताओं को काटता हुआ जबजबा जंगल में रास्ता बनाता आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था. कहा जाता है इस बियाबान जंगल में कोई इंसान अभी तक नहीं घुस पाया था.

आखिर वह जंगल में क्यों है? उसे खुद नहीं मालूम. उसे तो सिर्फ आगे बढ़ते जाना है.

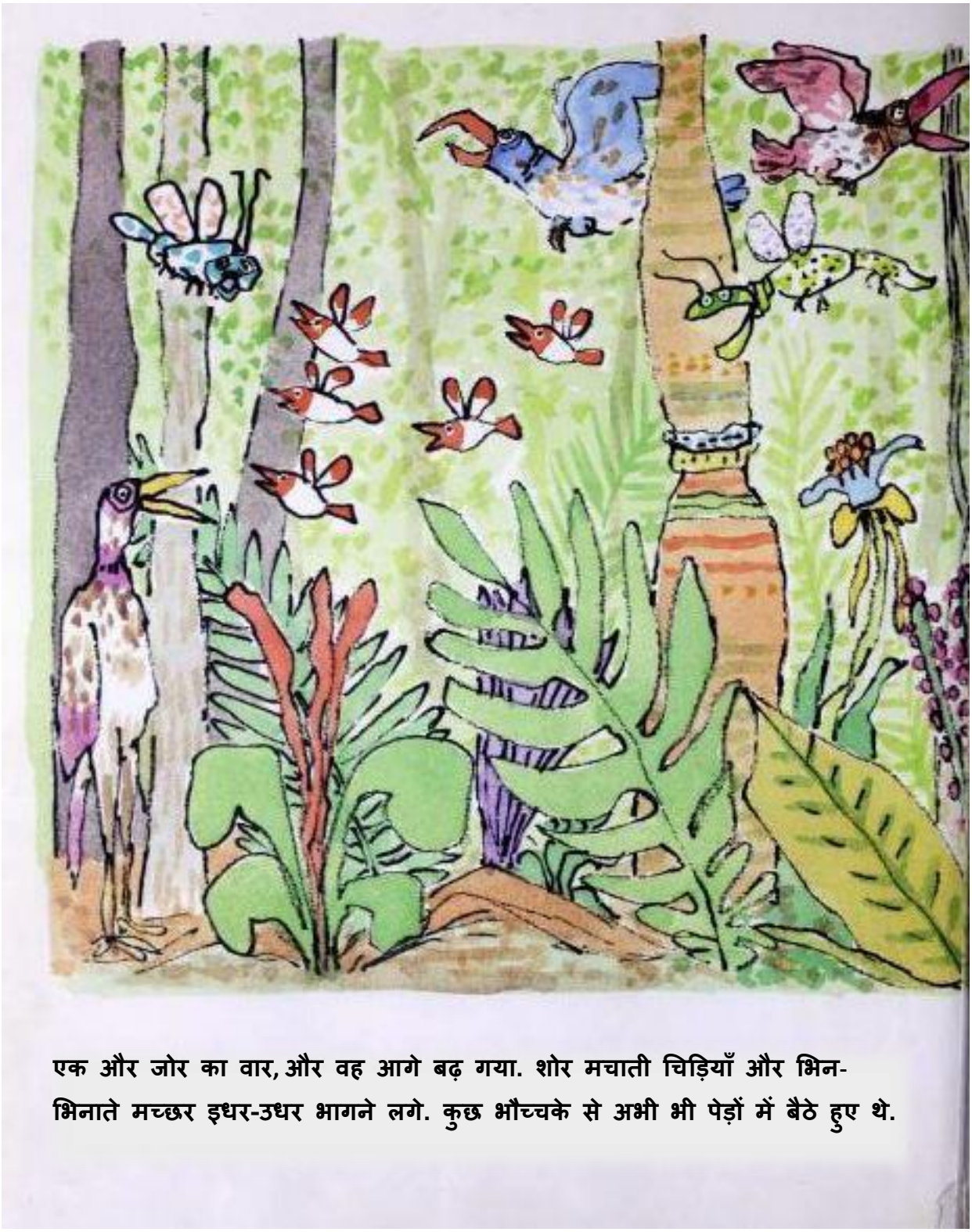

एक और जोर का वार, और वह आगे बढ़ गया. शोर मचाती चिड़ियाँ और भिन-भिनाते मच्छर इधर-उधर भागने लगे. कुछ भौच्चके से अभी भी पेड़ों में बैठे हुए थे.

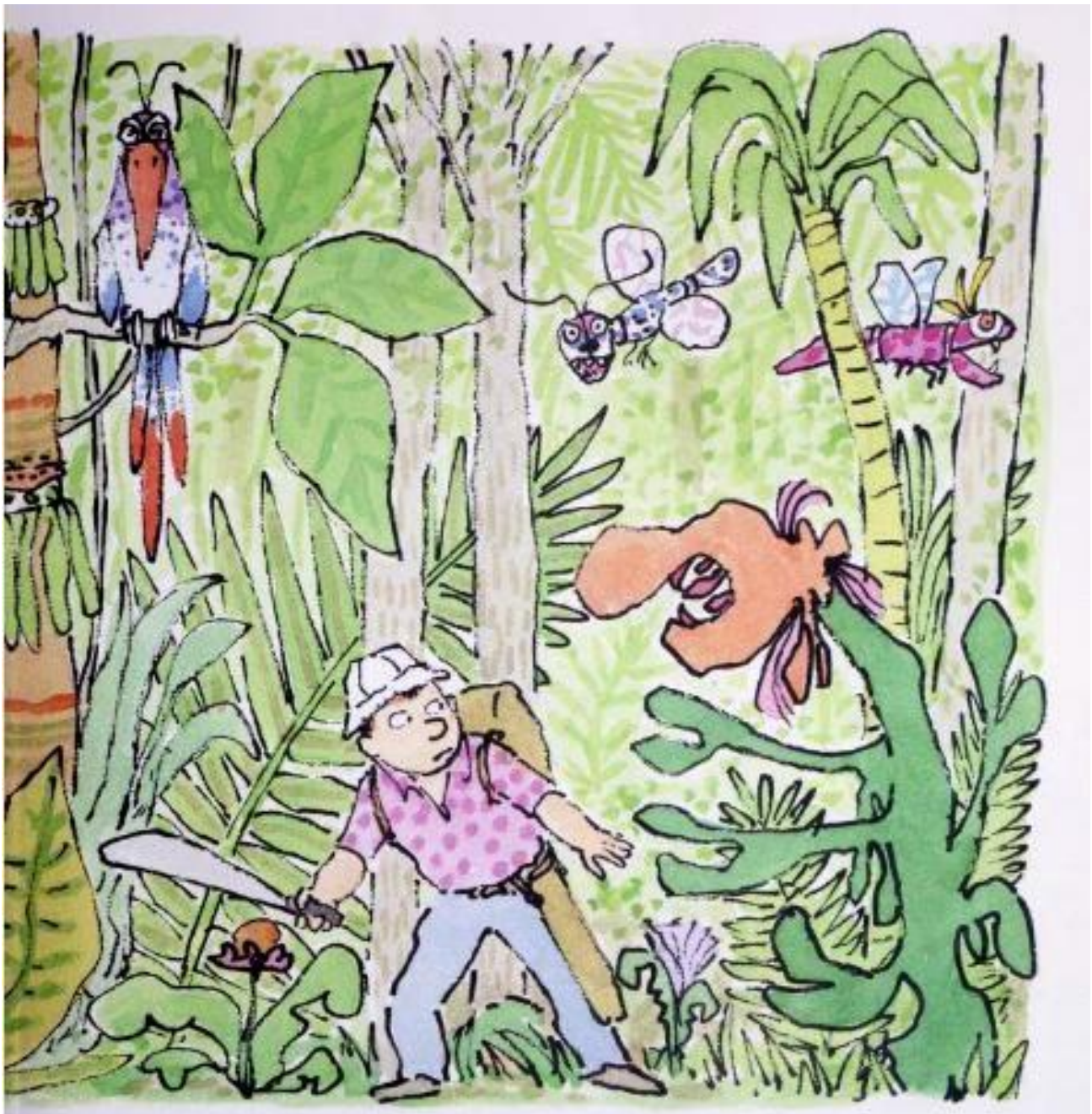

एक भूखा पेड़ उसको टटोलने के लिये आगे बढ़ा. पर वह छलांग लगा कर बच गया. उसने सोचा, मुझे चाकू मजबूती से पकड़े रखना चाहिये.

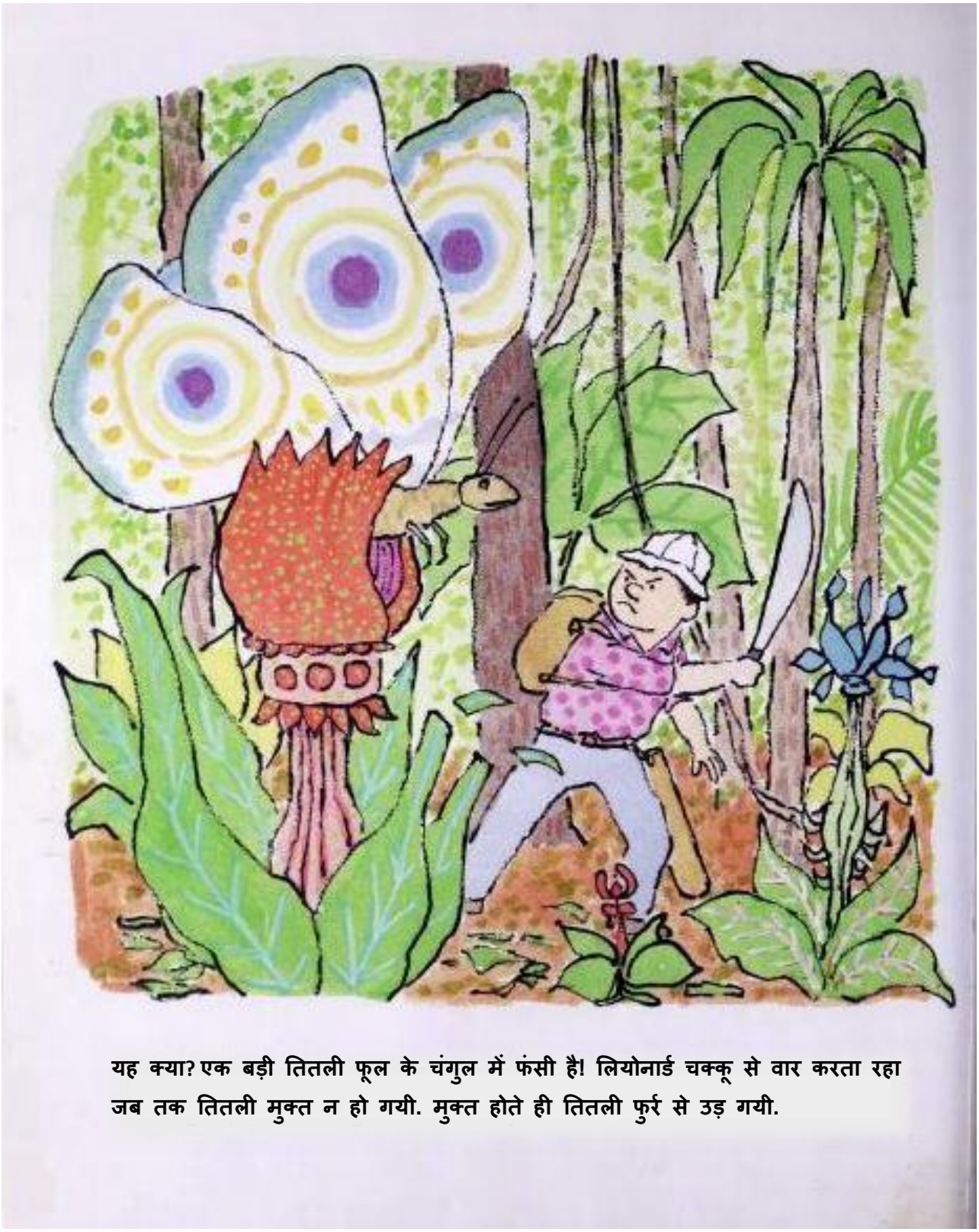

यह क्या? एक बड़ी तितली फूल के चंगुल में फंसी है! लियोनार्ड चक्कू से वार करता रहा जब तक तितली मुक्त न हो गयी. मुक्त होते ही तितली फुर्र से उड़ गयी.

धुंआ धार वर्षा शुरू हो गयी. लियोनार्ड तेजी से चलने लगा. अब यह क्या? मुँह फाड़े पत्थर का एक दानव!

वह मुँह में घुसता है और गले से उतर कर पेट में पहुँच जाता है. आश्चर्य चकित वो देखता है, पेट की दीवार पर अजीब सी लिखावट. लगता है मुझसे पहले यहाँ और भी लोग आ चुके हैं!

लियोनार्ड आँतों की छानबीन करता है. यहाँ कंटीले जीव उसकी टांगों से रगड़ते इधर-उधर घूम रहे हैं. अंत में उसे रौशनी दिखाई देती है और वह मलद्वार से बाहर निकल आता है.

जंगल में अँधेरा और सन्नाटा छाने लगा. काफी देर हो गई थी. चारों तरफ की हरियाली से उसे झपकी आने लगी.

वह झूलन-खटोले (हैमक) को दो पेड़ों के बीच बांध उसमें लेट जाता है.

रात हो जाती है. सोचता है, अब क्या होगा? अब किससे मुटभेड़ होगी? वह टॉर्च जलाता है. रौशनी में उसे पेड़-पौधों के अलावा कुछ और नहीं दिखता

वह अंगड़ाई लेता, टॉर्च बुझा, सो जाता है.

जब वह उठता है तो देखता है उसके नीचे की जमीन रेंगते, फुंफकारते सांपों के ढेर से भरी हुई है. लियोनार्ड सोचने लगा, काश वह अपने घर बिस्तर पर होता!

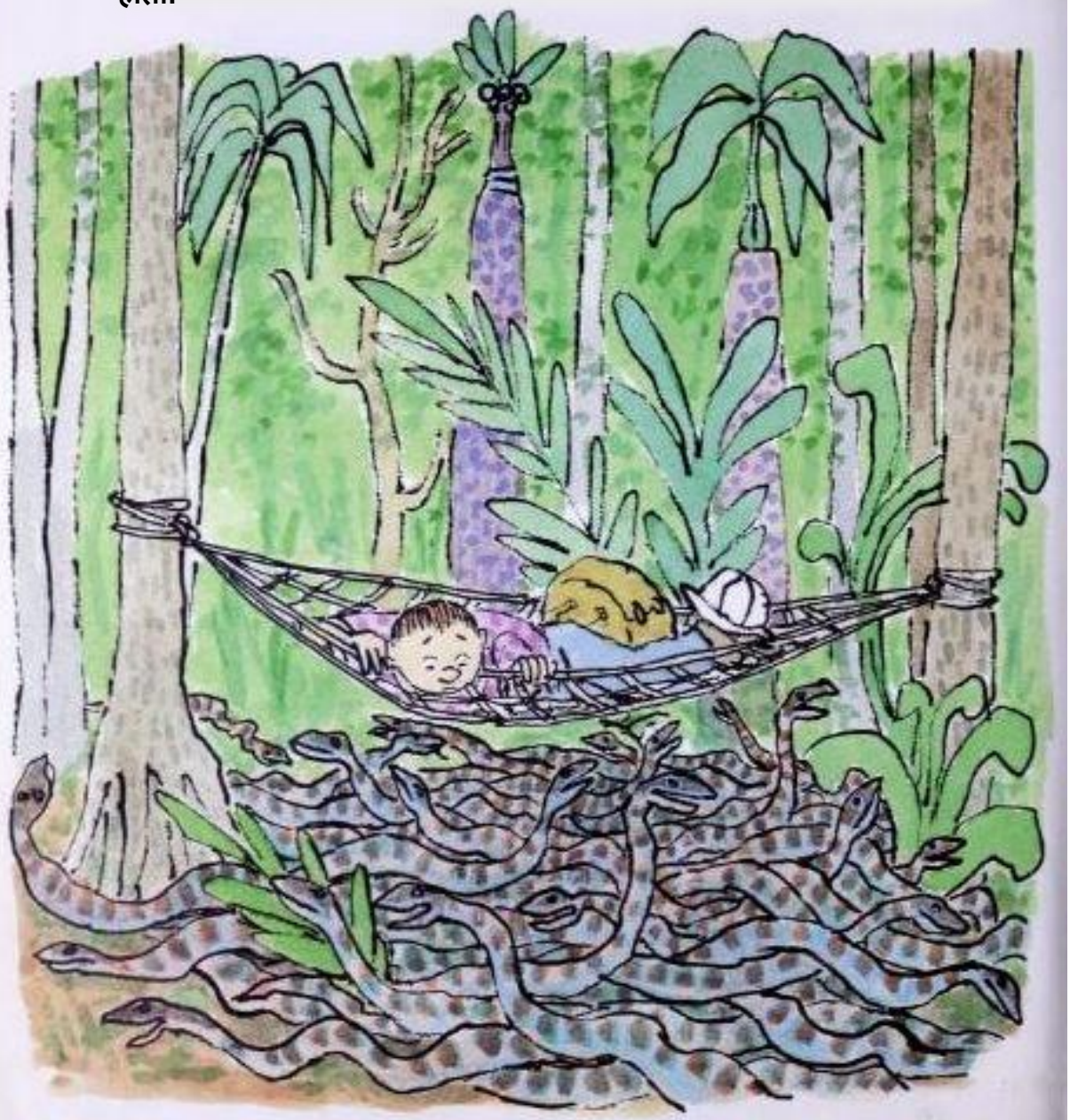

अरे देखो! हैमक के ऊपर मडराती हुई यह तो वही बड़ी तितली है!
वह उसकी रोएंदार पीठ पर चढ़ ऊपर उड़ जाता है.

तितली उसे फूलों के बगीचे में उतार फड़-फड़ाती उड़ गयी.

उसे चिड़ियों का गाना सुनाई देता है और फिर एक आवाज: "ऐ, इंसान!"

"तुम कौन हो?" वह पूछता है.
"मैं फ़्लोरा हूँ."
"मैं लियोनार्ड हूँ," "बाहर आओ, मैं देखूं तो तुम्हें."

"नहीं, मैं नहीं आ सकती. शर्म आती है मुझे. सुनो लियोनार्ड. वो पीले फूल देख रहे हो न, वे मधुर रस से भरपूर हैं. जाओ भर पेट पीलो."

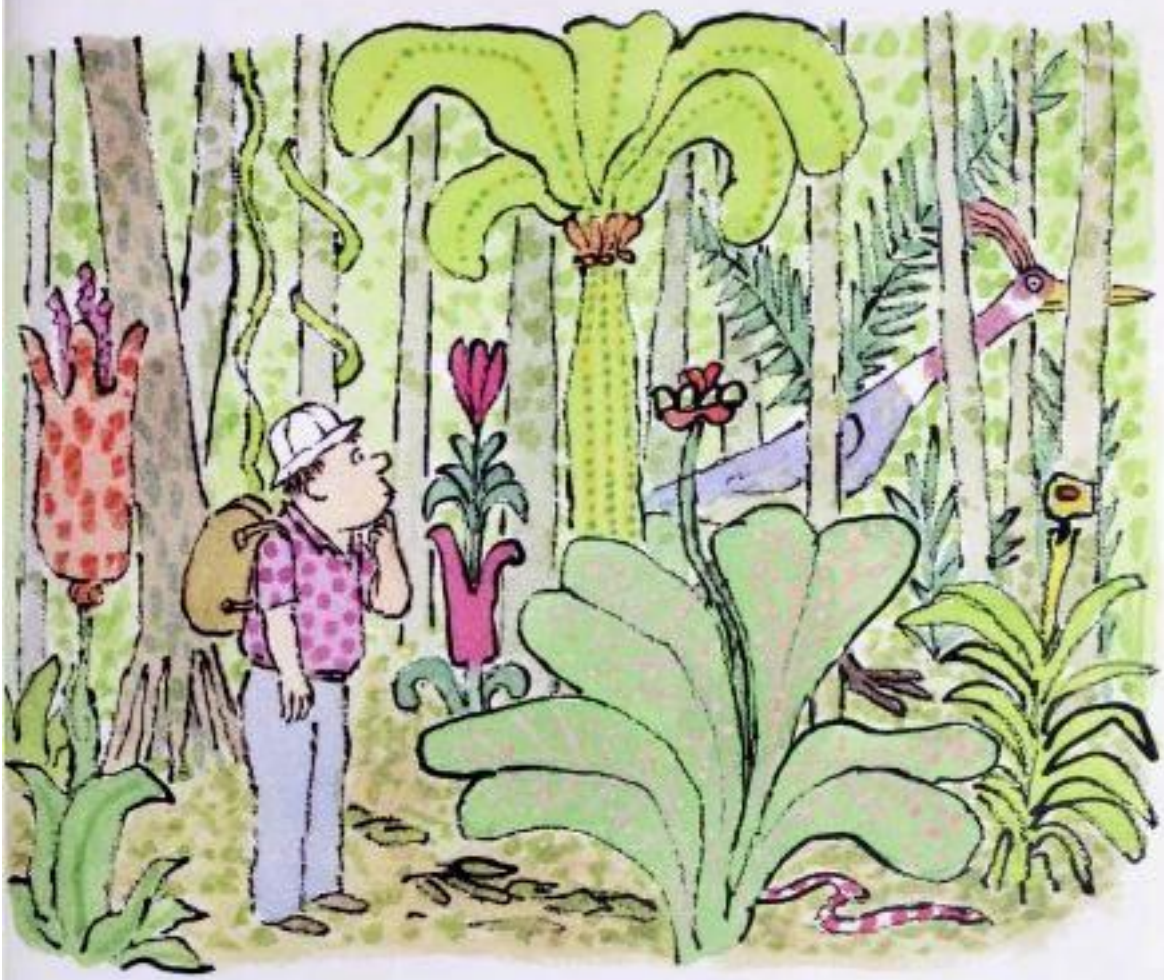

"बहुत-बहुत धन्यवाद," लियोनार्ड बोला.
"यह तो मेरे लिये ख़ुशी की बात है," फ़्लोरा बोली. "अच्छा, अब अलविदा"
लियोनार्ड को पेड़ों के बीच फुदकती एक बेडौल चिड़िया दिखी.

लियोनार्ड एक पीले फूल के ऊपर चढ़कर उसका रस चखने लगा. कैसी अजीब बात है? इसका स्वाद तो जाना पहचाना लगता है!

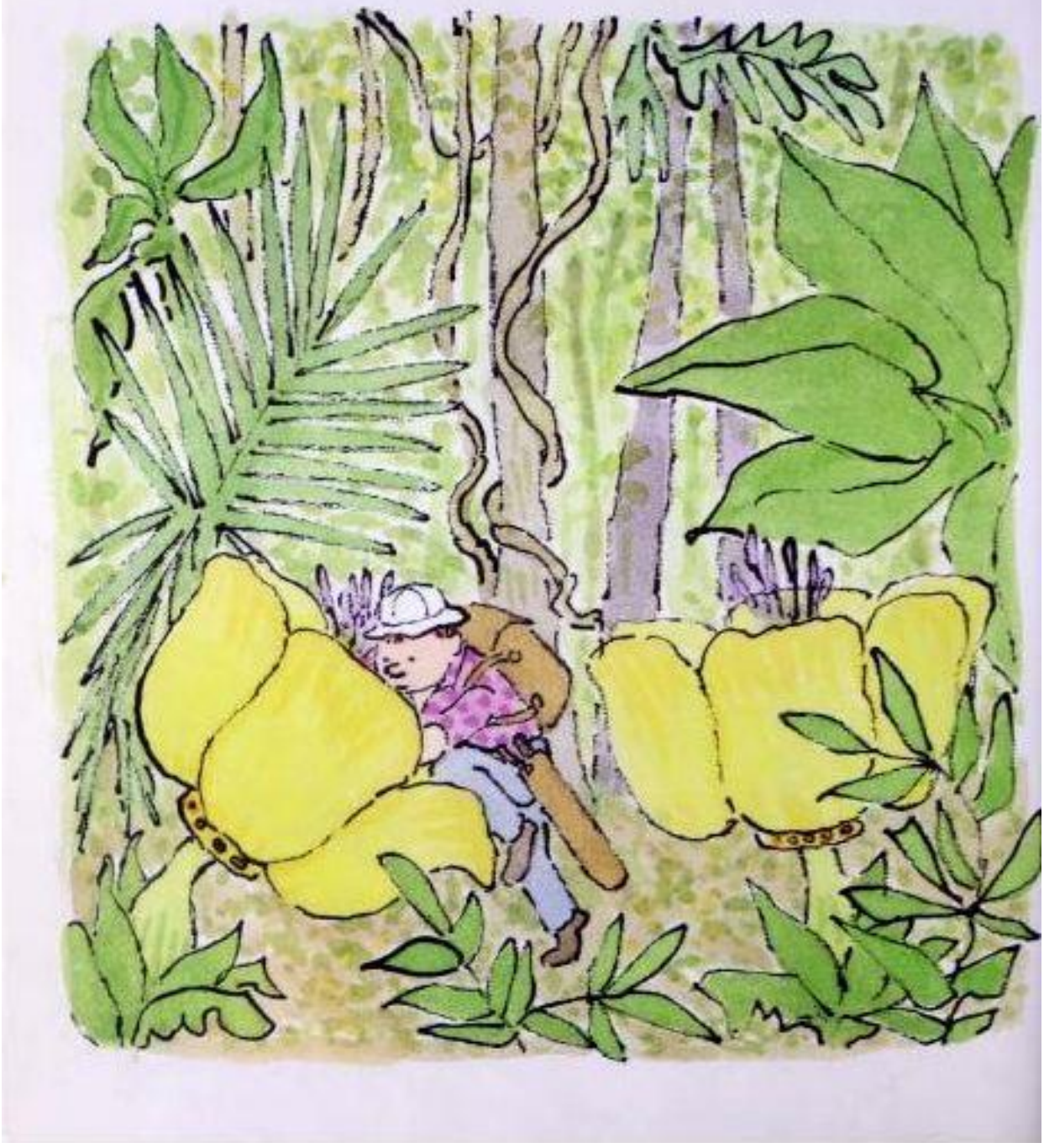

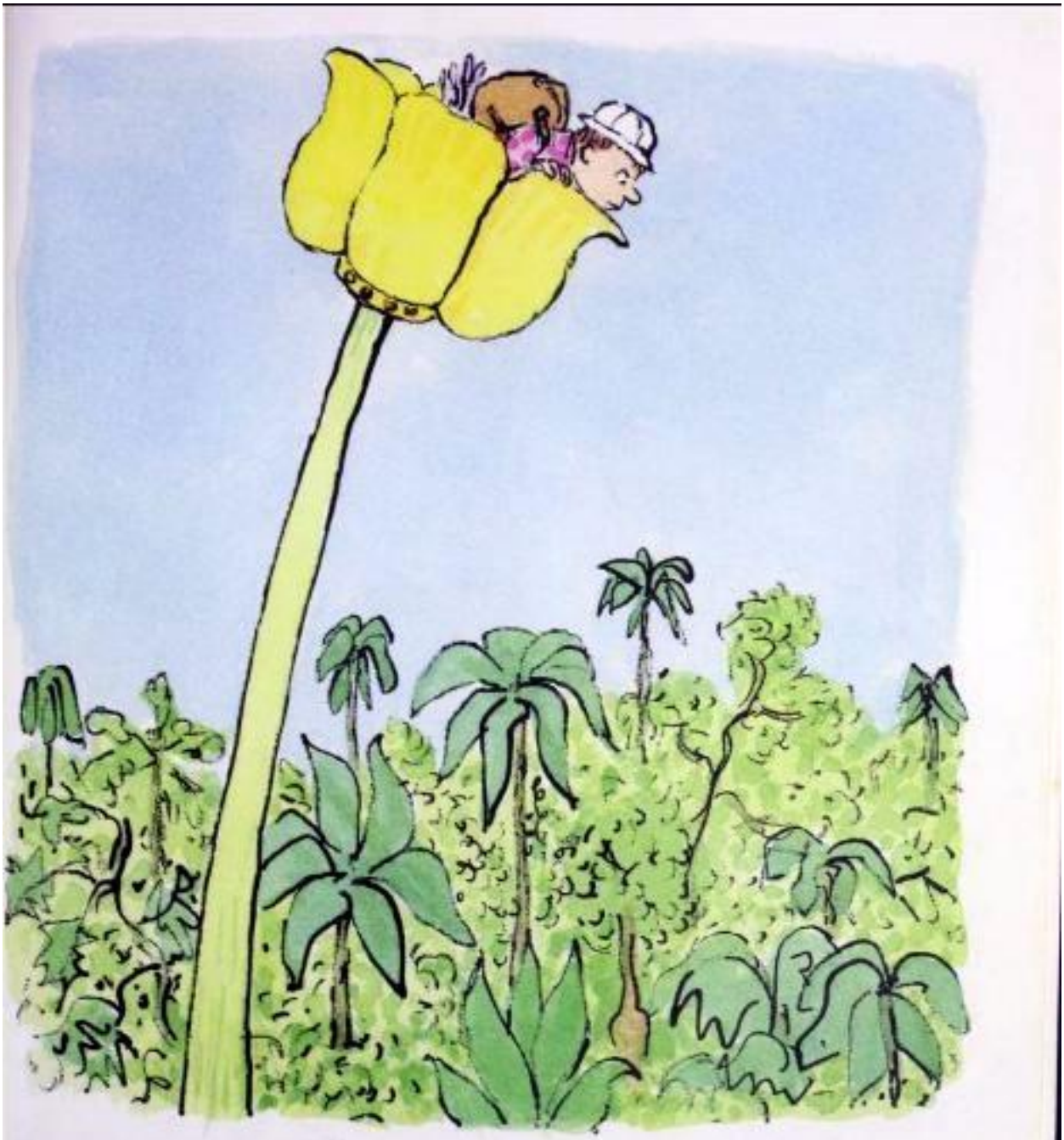

अरे यह क्या हो रहा है? अचानक फूल का तना लम्बा होने लगा!
बेहतर यही होगा कि मैं कूद पड़ूं.

क्या यही लियोनार्ड का अंत है? नहीं. भाग्यवश लियोनार्ड फ़र्न-पौधों के ऊपर गिरा.

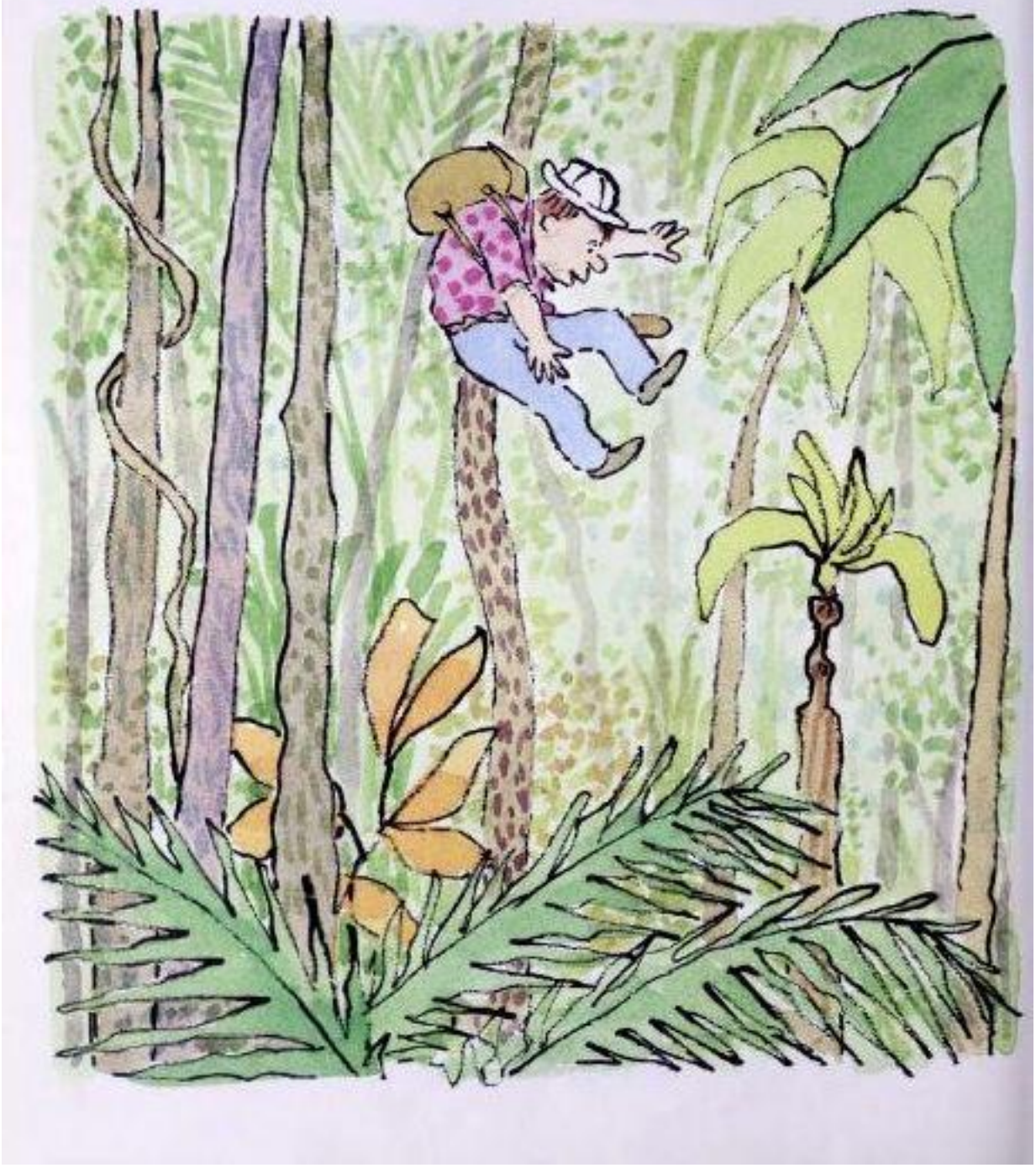

नीचे, नीले-कूल्हे वाले बंदरों का एक झुण्ड इंतजार कर रहा था. वे उसे घसीट कर ले गये.

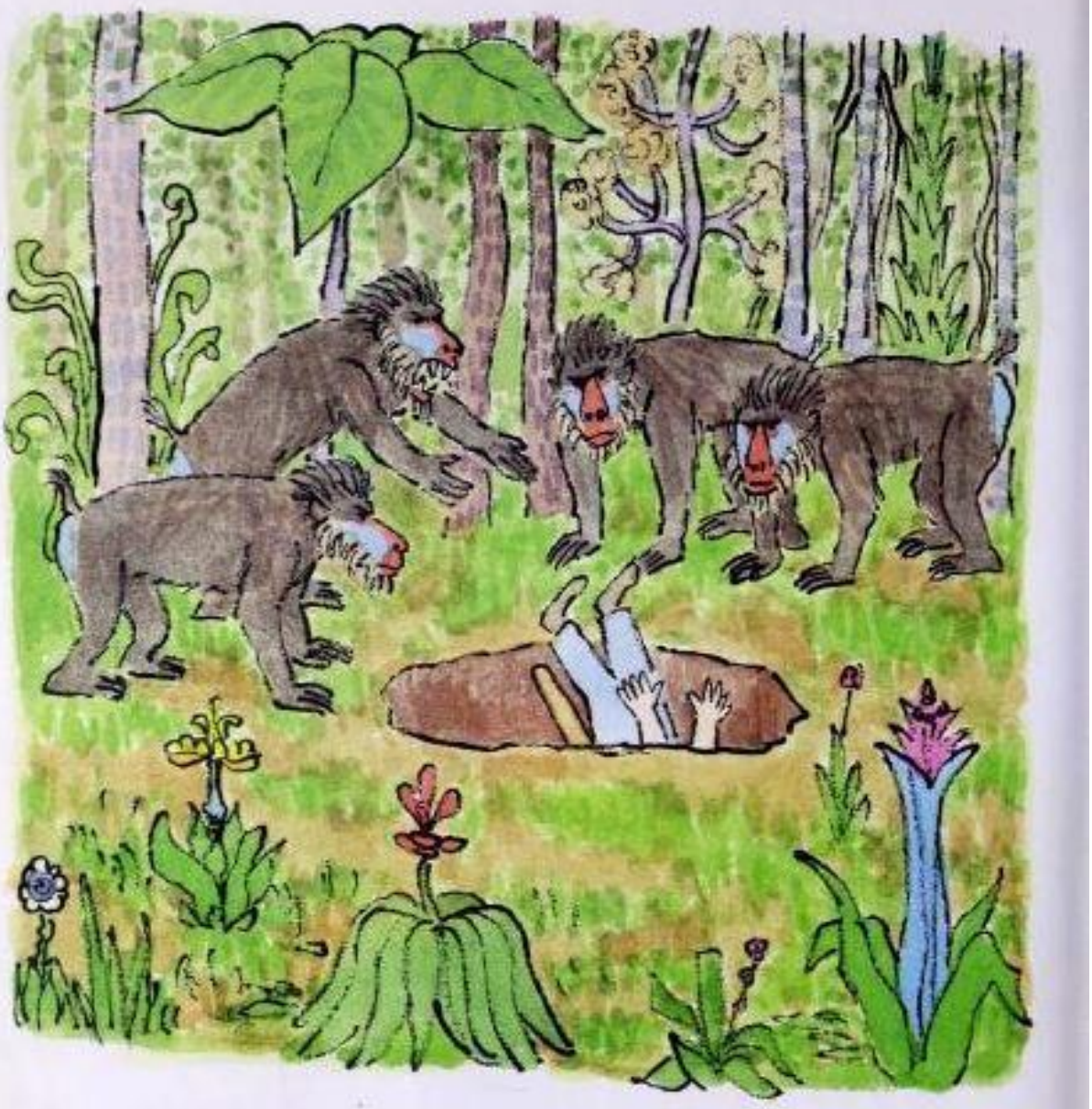

और उसे एक गहरे गड्ढे में धकेलकर चले गये. लियोनार्ड ने अपने चक्कू से सीढ़ियां बनाकर निकलने की कोशिश की. पर कोई फायदा नहीं हुआ.

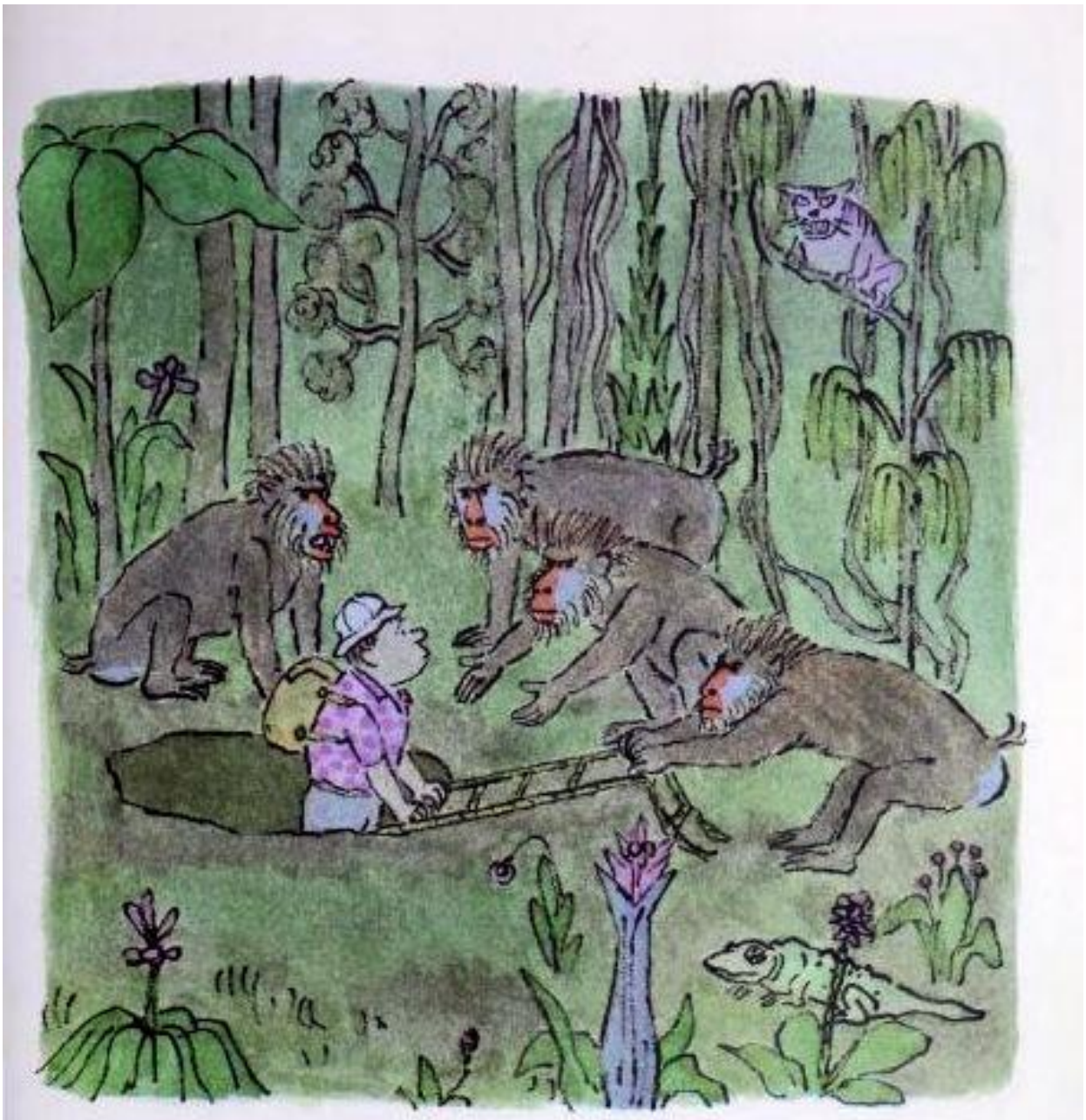

रात में बंदर वापस आये. उन्होंने रस्सी की एक सीढ़ी गड्ढे में डाली.
लियोनार्ड उसके सहारे ऊपर सीधा उनकी बांहों में आगया.

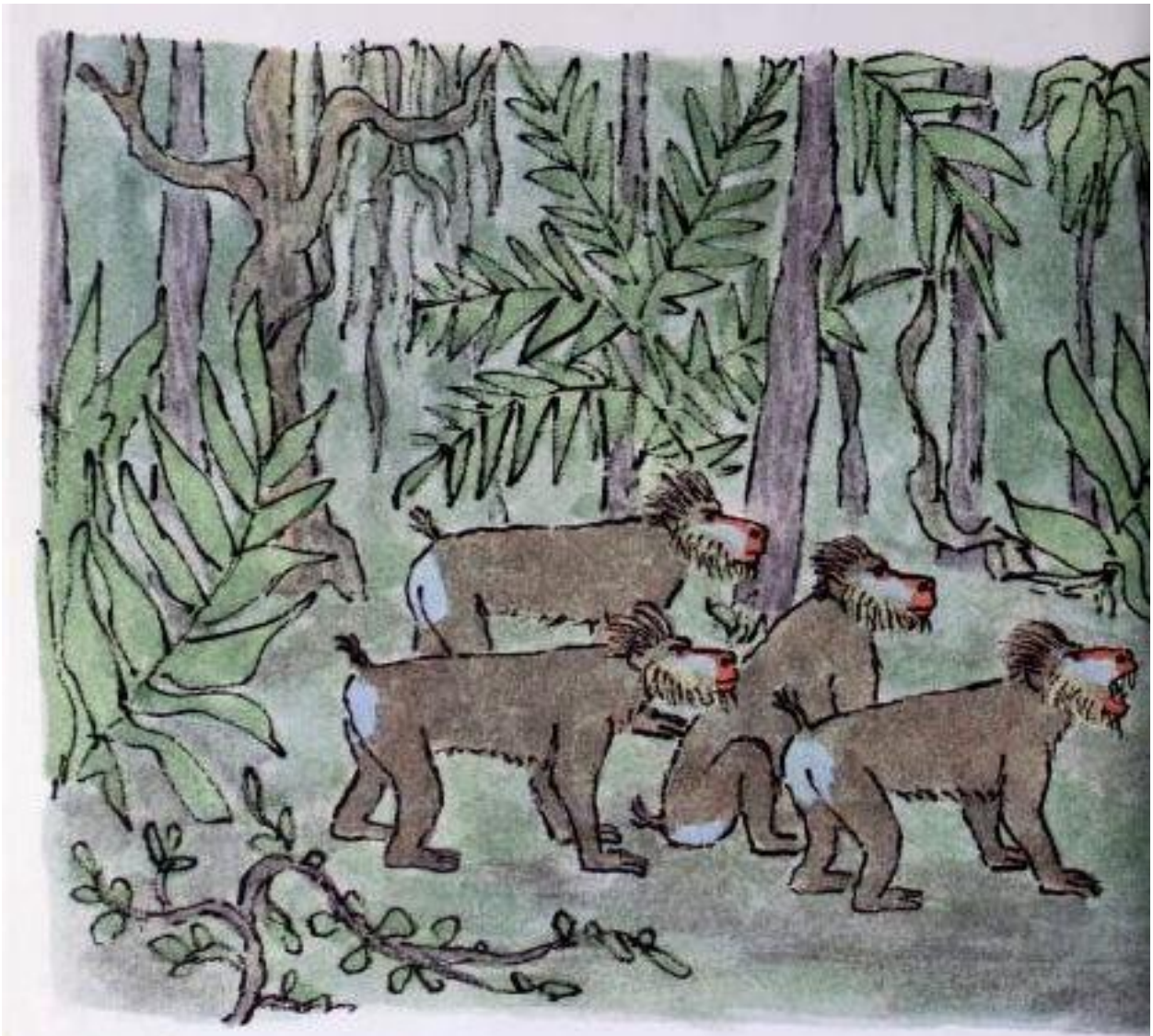

उन्होंने उसे तीन न्यायाधीशों के सामने प्रस्तुत किया -- एक चिड़िया के सिर वाला था, दूसरा चूहे के, और तीसरा सांप के.

"इंसान हो," चिड़िया के सिर वाले ने पूछा," जबजबा जंगल में क्या कर रहे हो?"

"वास्तव में मुझे भी नहीं मालूम."

"तुम्हें जबजबा फूल के रस पीने की अनुमति किसने दी?" चूहे के सिर वाले ने पूछा.

"एक अजीब सी चिड़िया ने."

"आहा, वो बदमाश फ़्लोरा!" सांप के सिर वाला बोला. "जबजबा फूल का रस पीना कानून के खिलाफ है. तुम अपने को समझते क्या हो?"

"लियोनार्ड!" झाड़ियों से एक आवाज आई. "दिखादो इन्हें कि आखिर तुम कौन हो! अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करो, लियोनार्ड."

लियोनार्ड ने बैकपैक से कुछ आतिशबाजियाँ निकाल उनका भव्य प्रदर्शन किया. उसके बंधक चकित रह गये.

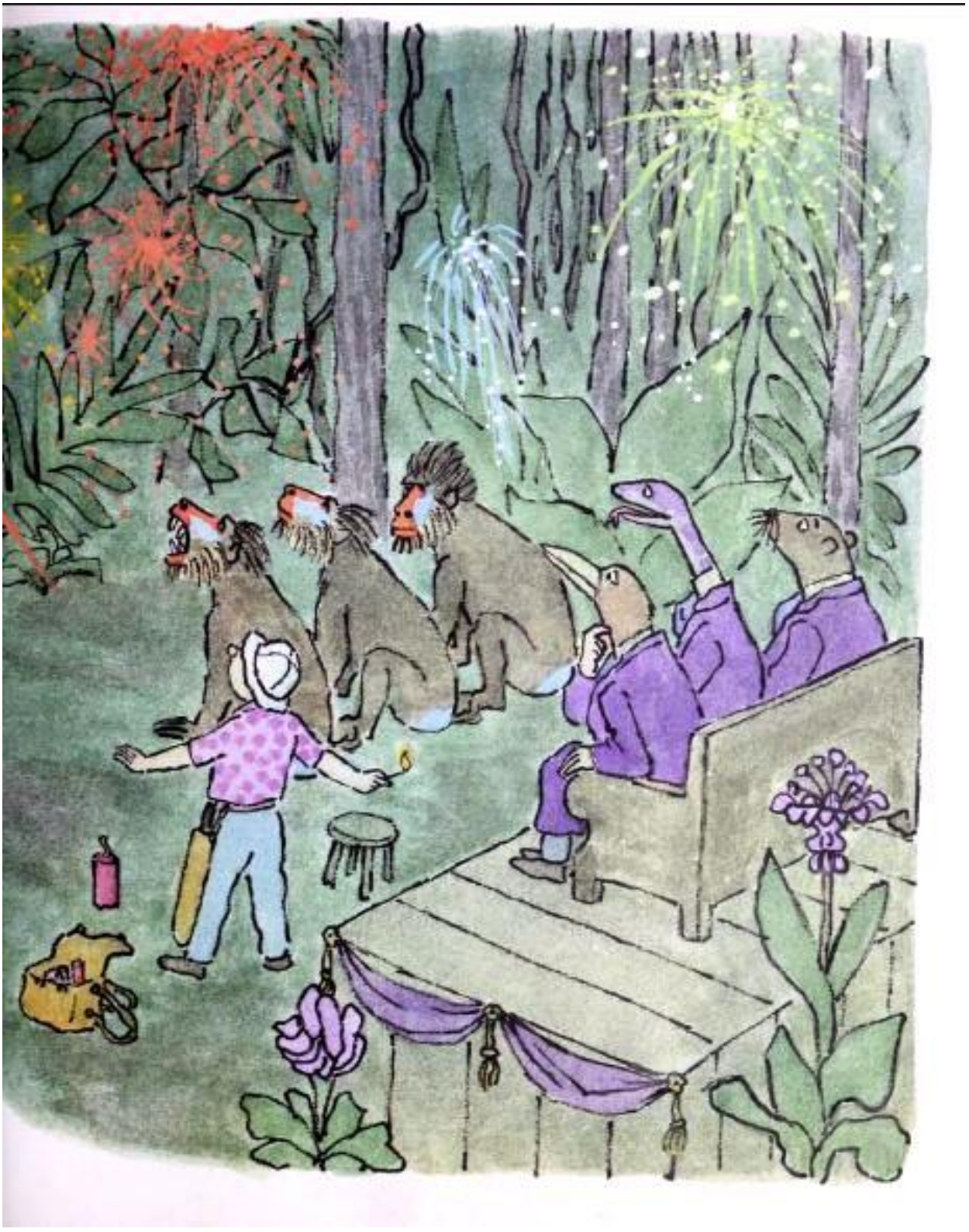

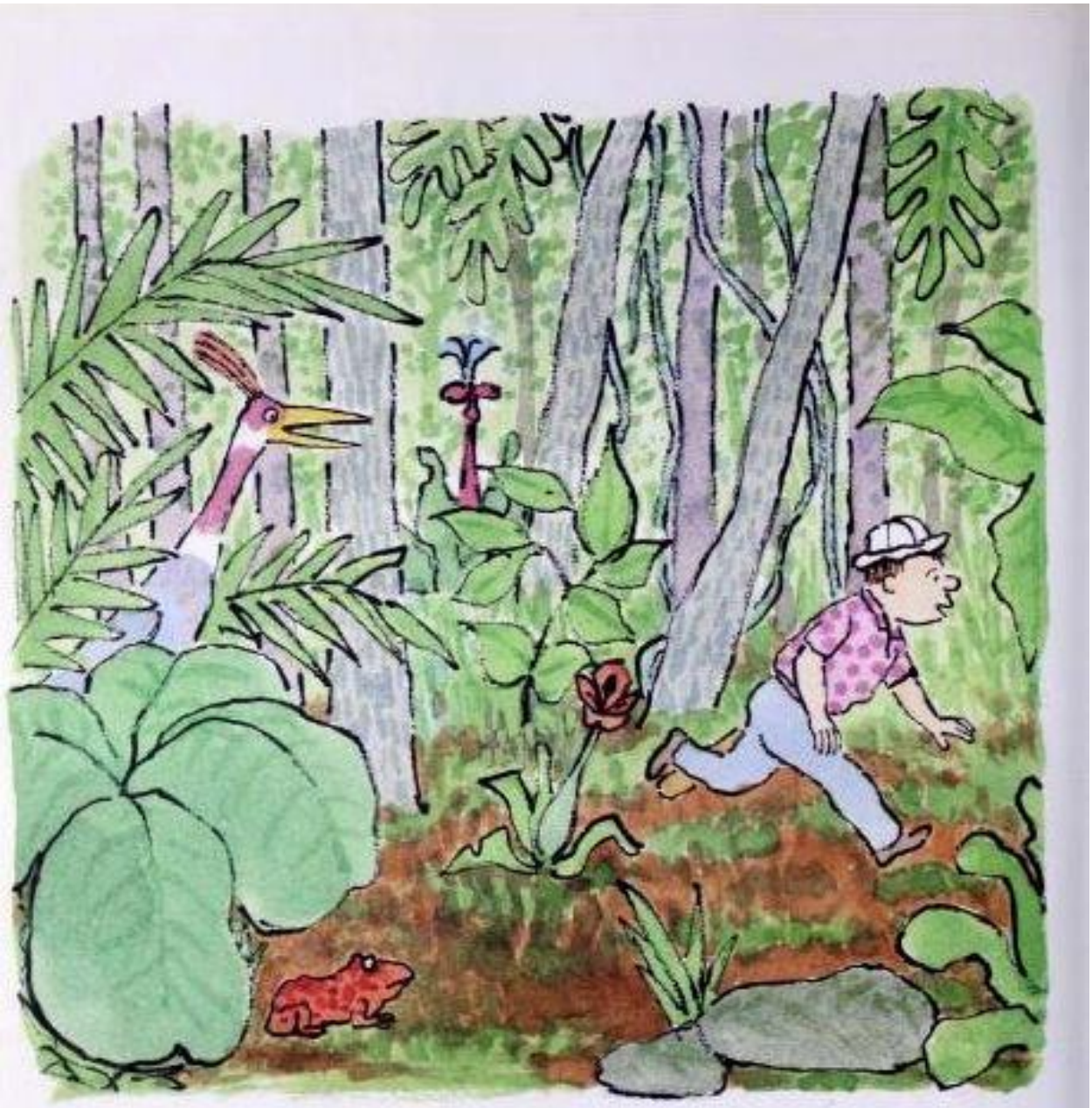

फ़्लोरा कूद के बाहर निकली. "जल्दी करो, लियोनार्ड. इस तरफ आओ!" दोनों एक गुप्त रास्ते से भाग निकले. अंत में वह बोली, "अलविदा, बहादुर बच्चे, अलविदा!"

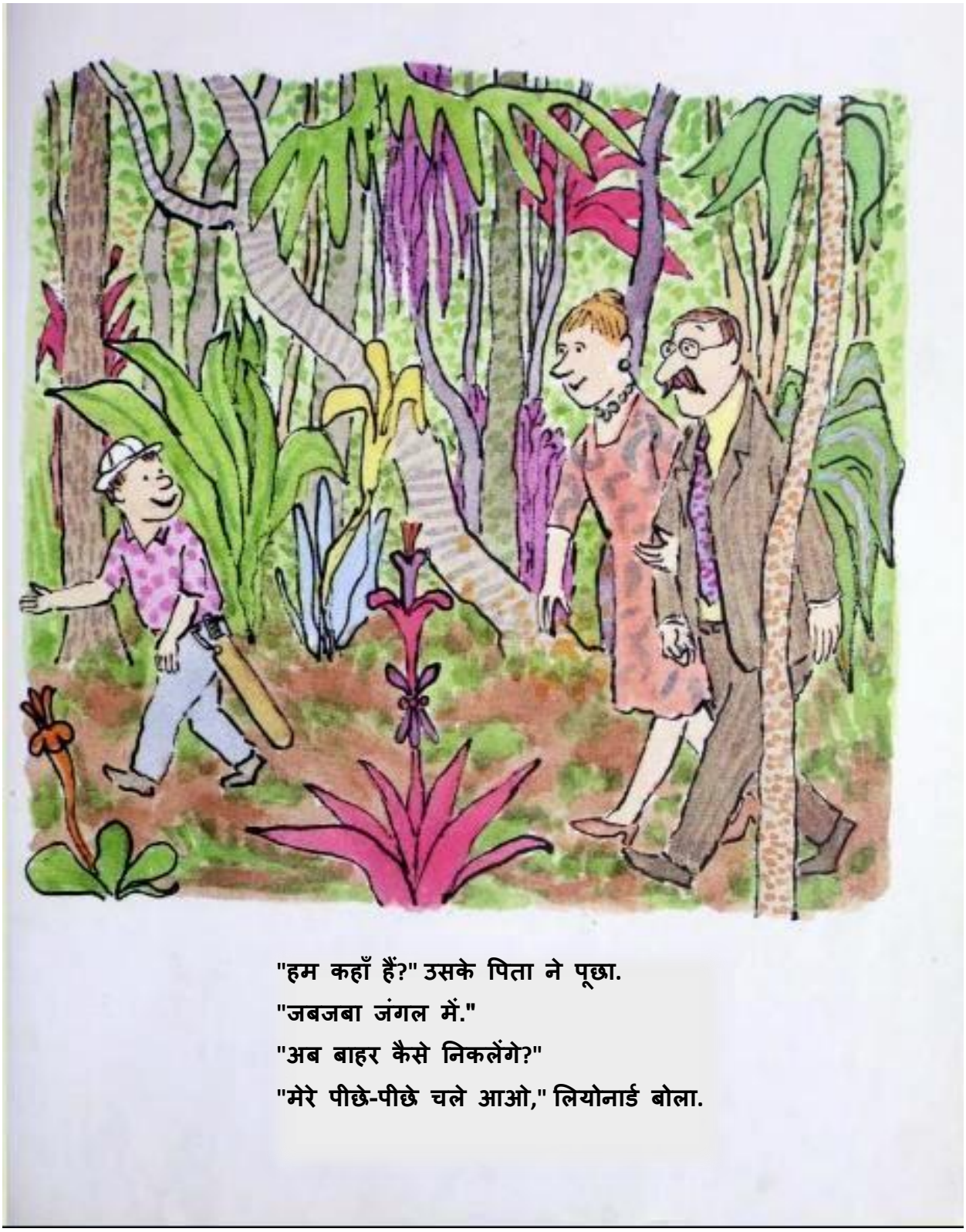

"हम कहाँ हैं?" उसके पिता ने पूछा.

"जबजबा जंगल में."

"अब बाहर कैसे निकलेंगे?"

"मेरे पीछे-पीछे चले आओ," लियोनार्ड बोला.